सूक्तियां

गुरू वही है, जिसके पास आपके गुरू बन जाने की कुंजी है... जो आपके यह समझने में सहायक सिद्ध होता है कि आप भी गुरू बन सकते हैं और यह कि आप और परमेश्वर दोनों एक ही हैं। गुरू माँ की केवल इतनी ही भूमिका है।

परम गुरू माँ चिंग हाई

हमारा मार्ग कोई धर्म नहीं है। मैं किसी को भी ईसाई अथवा बौद्ध अथवा और किसी भी मत का पालक नहीं बनाती। मैं तो केवल आपको स्वयं को ही जानने का राह दिखलाती हूँ। यह मालूम करने का कि आप कहाँ से आए हैं, इस धरती पर आने का आपका उद्देश्य क्या है, ब्रह्माण्ड के रहस्य ढूँढ़ने का रास्ता मैं दिखलाती हूं। यह समझने में मदद करती हूं कि संसार में इतनी दरिद्रता क्यों है और यह कि मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा।

परम गुरू मां चिंग हाई

हम परमेश्वर से दूर हैं क्योंकि हम बहुत व्यस्त रहते हैं। अगर कोई आपसे बात कर रहा है और टेलीफोन की घंटी बजे ही जा रही है और आप रसोई बनाने अथवा दूसरों से बातचीत करने में व्यस्त हैं तो कोई भी आपसे सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकता है। यही बात परमेश्वर के बारे में भी लागू होती है। वे तो प्रतिदिन पुकारते रहते हैं बस हमारे पास ही उनके लिए समय नहीं है, हमेशा हम उन्हें अनसुना करते रहते हैं।

परम गुरू माँ चिंग हाई

परम गुरू माँ चिंग हाई की संक्षिप्त जीवनी

गुरू माँ चिंग हाई का जन्म एक सम्पन्न परिवार में उच्चकोटि के विख्यात प्राकृतिक-चिकित्सक की पुत्री के रूप में ऑलक में हुआ था। उनका पालन- पोषण कैथोलिक मत के अनुरूप हुआ था। उन्होंने अपनी दादी माँ से बौद्ध धर्म की प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। छोटी आयु में ही दार्शनिक और धार्मिक शिक्षाओं में उन्होंने अपनी रूचि प्रकट की। सभी जीवधारियों के प्रति उनके मन में असाधारण संवेदना थी। अठारह वर्ष की आयु में वे अध्ययन के लिए इंग्लैंड गई और उसके बाद फ्रांस तथा जर्मनी जहाँ उन्होंने रेड क्रास के लिए काम किया, वहीं उन्होंने एक जर्मन वैज्ञानिक से विवाह कर लिया। दो वर्ष तक सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के बाद बोधप्राप्ति के अपने उद्देश्य की पूर्ति केलिए उन्होंने अपने पति की सहमति से अपने वैवाहिक जीवन का परित्याग किया। बोध प्राप्ति के उद्देश्य को उन्होंने बचपन से ही अपने मन में संजोया था। इस समय वे अध्यात्मिक अनुशासन और चिन्तन-मनन के विभिन्न अभ्यासों का अध्ययन उन गुरूओं और शिक्षकों के मार्ग दर्शन में रह कर, कर रही थी जो उन्हें उपलब्ध थे। उन्होंने यह महसूस किया कि पीड़ित मानव जाति की सहायता में कोई एक व्यक्ति कितना असमर्थ है। उन्होंने यह समझा कि स्वयं को संपूर्ण रूप से समझना ही किसी की सहायता करने का सबसे अच्छा रास्ता है। अपने इस एकमात्र उद्देश्य के साथ उन्होंने विश्व के विभिन्न देशों की यात्रा की और बोधप्राप्ति की श्रेष्ठ पद्धति को खोजने का प्रयास किया।

वर्षों के अथक प्रयास, परीक्षण और घोर कष्ट के पश्चात् अंततः हिमालय में उन्हें क्वान यिन पद्धति और दिव्य संप्रेषण की प्राप्ति हुई। परिश्रम पूर्ण अभ्यास की एक अवधि के बाद, उनके हिमालय क्षेत्र के आवास के दौरान उन्होंने सम्पूर्ण बोधत्व प्राप्त कर लिया। बोधप्राप्ति के कुछ वर्षों बाद तक गुरू माँ एक बौद्ध भिक्षुणी सा शांत एवं सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करती रहीं। गुरू माँ संकोची स्वभाव की हैं। उन्होंने अपने ज्ञान केबहुमूल्य भंडार को तबतक गुप्त रखा जबतक कि लोगों ने स्वयं उनके निर्देश और दीक्षा संस्कार को ढूँढ़ नहीं लिया। यह उनके अमेरिका और फार्मोसा (ताइवान) के प्रारम्भिक शिष्यों के हठपूर्ण आग्रह और प्रयत्न का ही परिणाम है कि गुरू माँ चिंग हाई विश्वभर में अपने व्याख्यान देने को राजी हुई तथा उन्होंने लाखों ऐसे लोगों को दीक्षित किया है जो सच्चे मन से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

आज अधिकाधिक सत्य की खोज में प्रयासरत विभिन्न देशों और धर्मों के लोग उनके अथाह ज्ञान के लिए उनकी शरण में आते हैं। गुरू माँ चिंग हाई उनलोगों को आध्यात्मिक नेतृत्व और दीक्षा देना चाहती हैं जो गम्भीरता के साथ तत्काल बोधप्राप्ति की पद्धति को सीखना तथा अभ्यास करना चाहते हैं, जिसे स्वयं गुरू माँ ने परखा और श्रेष्ठतम माना है।